रात्रिक्लास 14.3.68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?''

तुम्हारे बाबा को हम रथ में बिठा रोज़ ले आते हैं। ऐसे नहीं सदैव रथ पर ही हैं। वह तो स्वतंत्र है। जानते हो बाबा रथ है। रथी सवार है। तुम बच्चों को अपना और रचना का परिचय देते हैं। तुम कहते हो हम बाप–दादा, रथ–रथी पास जाते हैं। और तो कोई ऐसा होता है। बाप का ही कल्प के संगमयुगे–2 पार्ट चलता है। संगमयुग को तुम ही जानते हो। तुम कितना दूर से आते हो। कहते हो हम बेहद के बाप पास जाते हैं। वह टीचर भी , सद्गति दाता भी है। ब्रह्मा द्वारा एक धर्म की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश। आँख आद(दि) खोलने की बात नहीं। तुम जानते हो पै(फै)मन आद(दि) होगा। उन पर क्यों दोष रखते हो? शिवबाबा का तो पार्ट ही है। इनका भी पार्ट है अलग। हरेक आत्मा पार्टधारी है। परमात्मा को तो रथ चाहिए ना। मनुष्य नहीं जानते। हम भी बड़ा भक्त था। 12 गुरु किये हैं। जो आता था उनसे पूछता था। यहां भी आते हैं पूछा जाता है गुरु किया है? फिर क्यों आये हो? कहते हैं कोई सहज रास्ता भगवान से मिलने का मिल जाये तो। सुनते हैं तो समझते हैं यहां तो बहुत सहज है। फिर अनुभव सुनाते हैं कैसे हमको निश्चय हुआ। बहुत ही थोड़ा सुनने से दिल लग जाती है। बांधेलियों को भी सा. होती है। एमऑब्जेक्ट है। कृष्ण की राजाई में तुम जा सकते हो ; परन्तु ब्रह्मा द्वारा। कृष्ण को सभी बहुत प्यार करते हैं। ल.ना. से कृष्ण जास्ती प्यारा लगता है। जन्माष्टमी पर झुलाते हैं। उन बिचारों को पता नहीं है कि ल.ना. और कृष्ण एक ही है। यह सभी बातें बाप बताते रहते हैं। सारी दुनियाँ का बाप है ना। तो बाप को सभी मालूम नहीं होगा घर का। बाप है ना। रचयिता है। सारी दुनियाँ को जानते हैं; इसलिए बेहद का बाप, बेहद का वर्सा बेहद का ज्ञान मिलता है। फॉरेनर्स इतना सीढ़ी से नहीं समझ सकते हैं जितना चक्र और झाड़ से। गीता में भी है झाड़ जड़–जड़ीभूत हो गया है। सीढ़ी से और धर्म वाले नहीं समझेंगे। इसमें तुम्हारे 84 का चक्र है। तुम बच्चे तो जानते हो वहां जा(स)ती आदमशुमारी होती नहीं। और गिनती करने की भी बात नहीं। वहां रसम–रिवाज़ ही अलग रहती है। आगे चल कर मालूम पड़ता जाये हो सकता है । ड्रामा पर भी बहुत मूंझेंगे। कहेंगे सोना ख़लास हो गया। फिर कहां से आवेगा? खानियां भरतू हो जावेंगी और क्या? अभी खाली हो गईं हैं। फिर सभी नई हो जावेंगी। इन बातों में मूंझना न चाहिए। एक बात पक्की करो , आत्मा तमोप्रधान बनी है। अभी मामेकं याद करो तो पावन बन सकेंगे। तुम पतित हो ; इसलिए पर टूटे हुये हैं। उड़ नहीं सकते हो। बुलाया ही है पावन होने लिए। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो शक्ति मिल जावेगी। यह बात तो सहज है ना। और कोई उपाय ही नहीं । यहां जब आते हो तो खुशी का पारा चढ़ जाना चाहिए। बाहर मे तो वायुमण्डल बहुत ख़राब रहता है। जैसे जंगली जनावर हैं। नया मकान बनता है तो खुशी होती है ना। तुम भी कहेंगे हमारी नई दुनियाँ बन रही है। इसका नाम ही है स्वर्ग। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए हम अपने बेहद के बाप पास जाते हैं। वह रथ का लोन लेते हैं। औरों को भी समझाने लिए मेहनत करते रहते हैं। प्रजा बहुत बनती है। पुरुषार्थ तो करना चाहिए ना ऊँच पद पाने का। घर बैठे याद तो करते हो ना। जन्म–जन्मांतर के पाप भस्म करने मे मेहनत लगती है। तुम बच्चों ने भक्तिमार्ग में कितने धक्के खाये हैं। अभी तुमको तकलीफ नहीं देते हैं। ले (व)ही जावेंगे सभी को, जो परिस्तानी थे। वहां काम चिक्षा पर बैठ कब्रस्तानी बने हैं। अभी फिर बाप को याद कर परिस्तानी बनना है। उस बाप को सभी याद करते हैं। तो तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। याद से ही बेड़ा पार होगा। तुम आते हो, रिफ्रेश होकर जाते हो। फिर दूसरों को जाकर रिफ्रेश करते हो। आत्मा इन जैसे रिफ्रेश हो जाती है। यह ज्ञान गुम हो जाता है। शास्त्र आद(दि) सभी हैं भक्तिमार्ग के। ज्ञान सद्गति का एक ही है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते। ओमशान्ति।